परमात्म ऊर्जा

साकार में भी सदा साथ रहने के अनुभवी हो। अकेले रहना पसन्द नहीं करते हो। जब संस्कार ही साथ रहने के हैं तो ऐसे साथ रखने में कमी क्यों करते हो, निवृत्ति मार्ग वाले क्यों बनते हो? जैसे वह निवृत्ति मार्ग वाले प्राप्ति कुछ भी नहीं करते, ढूंढते ही रहते हैं। ऐसी हालत हो जाती है, वास्तविक प्राप्ति को प्राप्त नहीं कर पाते हो। तो सदा साथ रखो, सम्बन्ध में रहो। परिवार की पालना में रहो तो जो पालना के अन्दर सदैव रहते हैं वह सदा निश्चिंत और हर्षित रहते हैं। पालना के बाहर क्यों निकलते हो? निवृत्ति में कब ना जाओ। तो साथ का अनुभव करने से स्वतः ही सर्व प्राप्ति हो जायेंगी। सन्यासियों को इतना ठोकते हो और स्वयं सन्यासी बन जाते हो? सन्यासियों को कहते हो ना वह भिखारी हैं। इन मांगने वालों से हम अच्छे हैं। शुरू का गीत है ना - 'मेहतर उनसे बेहतर है' तो जिस समय आप लोग भी साथ छोड़ देते हो तो बापदादा व परिवार को छोड़ आप भी कांटों के जंगल में चले जाते हो। जैसे वह जंगलों में ढूंढते रहते हैं, वैसे ही माया के जंगलों में स्वयं ही साथ छोड़ फिर परेशान हो ढूंढते हो कि कहीं सहारा मिल जाए। निवृत्ति मार्ग वाले अकेले होने के कारण कब भी कर्म की सफलता नहीं पा सकते हैं।

जो भी कर्म करते, उनकी सफलता मिलती है? तो जैसे उन्हें कोई भी कर्म की सफलता नहीं मिलती इसी प्रकार अगर आप भी साथ छोड़ अकेले निवृत्ति मार्ग वाले बन जाते हो तो कर्म की सफलता नहीं होती है। फिर कहते हो सफलता कैसे हो? अकेले में उदास होते हो तो माया के दास बन जाते हो। न अकेले बनो, न उदास बनो, न माया के दास बनो।

कथा सरिता

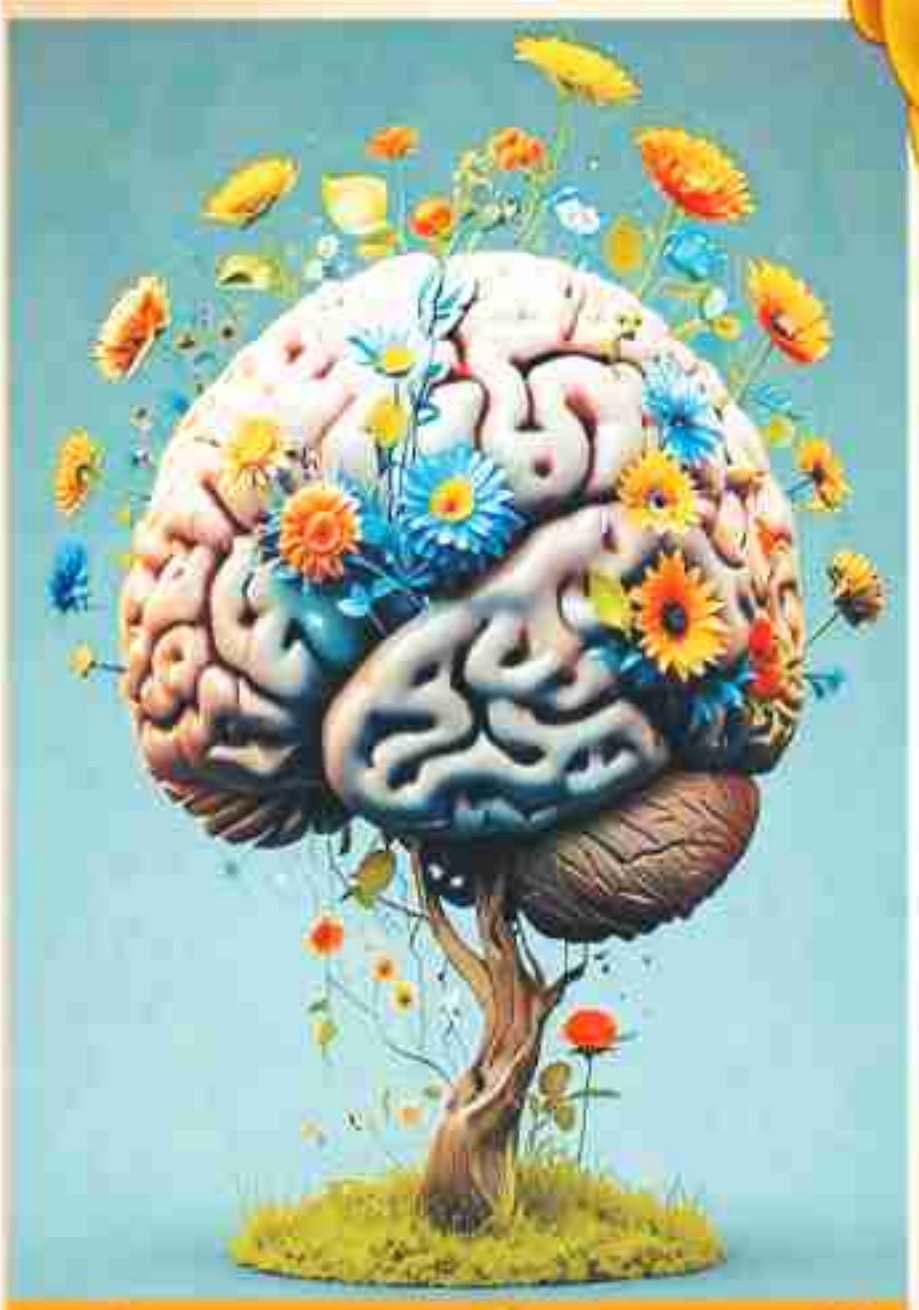

हमें गुणग्राही बनना है

सृष्टि के प्रारम्भ में जब मनुष्य का जन्म हुआ तो इसकी प्रबल इच्छा हुई कि क्यों न मैं इस सृष्टि को देखूं। बस फिर क्या था? निकल पड़ा मनुष्य इस सृष्टि को देखने के लिए। जैसे ही उसने अपनी यात्रा शुरू की तो सर्वप्रथम इसने देखा कि एक वृक्ष की डाल पर बैठकर कोयल अपने मधुर कण्ठ से कुछ गा रही थी। कोयल का मधुर गान सुनकर यह बहुत ही आनंदित हो उठा और बड़े ही मनोयोग से उसको सुनने लगा और खूब प्रसन्न हुआ, लेकिन अन्त में बोला - हे कोयल! काश काली न होती तो कितना अच्छा होता!

इसके बाद आगे बढ़ते हुए उसने बाग में गुलाब के फूल को देखा और बहुत ही हर्षित होते हुए उसके निकट जाकर उसकी भीनी-भीनी खुशबू का आनन्द लेने लगा लेकिन अंत में बोला - हे गुलाब! काश तेरे साथ ये कांटे न होते तो कितना अच्छा होता!

इसके बाद वह और आगे बढ़ा तो उसने समुद्र की ओर देखा और उसमें उठती हुई लहरों, तैरती हुई मछलियों आदि को देखकर प्रफुल्लित होने लगा, लेकिन अंत में चलते हुए बोला - हे समुद्र! काश तू खारा न होता।

घूमते-घूमते रात्रि का समय हो गया। संयोगवश उस दिन शरद्पूर्णिमा थी। चन्द्रमा अपनी 16 कलाओं से शोभायान होकर शीतल चाँदनी बिखेर रहा था। वातावरण अत्यंत ही रमणीय था। यह सब देखकर वह बहुत ही हर्षित हुआ और आनन्द मनाने लगा, लेकिन संयोगवश उसी समय उसकी दृष्टि चन्द्रमा पर पड़ गई और वह उदास हो गया तथा कहने लगा - हे चन्द्र देवता! काश तेरे अन्दर यह काला दाग न होता तो तू कितना अच्छा होता!

इसी प्रकार भ्रमण करते हुए उसने प्रकृति की असंख्य अमूल्य निधियों को देखा, लेकिन अपनी प्रकृतिवश उसने उन सभी में कोई न कोई कमी निकाली और सभी को कहता गया कि काश तेरे अंदर यह न होता तो कितना अच्छा होता!

यह सब देखकर प्रकृति की ये सभी अमूल्य निधियां सूर्य, चंद्रमा, नदी, समुद्र, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, हवा, धूप-छाँव आदि सभी एकत्रित हुए और एक स्वर में कहने लगे - अरे मनुष्य! अरे ओ प्रकृति के सुन्दरतम प्राणी ज़रा हमारी भी बात सुनता जा, तूने अपनी तो खूब सुना दी और सभी एक स्वर में बोले - कितना अच्छा होता कि काश तेरे अंदर ये दूसरों में कमी देखने की आदत न होती तो तू प्रकृति की सर्वोत्कृष्ट रचना होता।

सीख: यह कहानी हमें ये शिक्षा देती है कि हमें गुणों की ओर ध्यान देना चाहिए। अच्छाइयों को देखना चाहिए। इस सृष्टि में सर्वगुण सम्पन्न तो शायद ही कोई वस्तु या व्यक्ति हो। इसलिए हमें सिर्फ गुणग्राही बनना है।

सतना-म.प्र.। गिरजा गौरव महिला मंच की ओर से आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् चित्र में आमंत्रित ब्र.कु. अंकुलता बहन, गिरजा गौरव महिला मंच के जिलाध्यक्ष पूजा दंडगव्हाड़, तालुका अध्यक्ष वैशाली सोनवने, विधायक की धर्मपत्नी श्रीमती संगीता दिलीप बोरसे, डॉ. अंजलि जगताप तथा अन्य उपस्थित रहे।

अहमदाबाद-गुज.। ब्रह्माकुमारीज महादेवनगर द्वारा नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत आयोजित जागरूकता एवं ध्यान सत्र में उपस्थित ब्र.कु. भाई-बहनें।

भोपाल-म.प्र.। मंडीदीप स्थित शीतल मेगा सिटी के पीस पार्क में ब्रह्माकुमारीज की वर्ष 2025 की थीम 'विश्व एकता और विश्वास के लिए ध्यान योग' विषय पर आयोजित कार्यक्रम में राजयोगिनी ब्र.कु. डॉ. रीना,गुलमोहर कॉलोनी, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. मंजू, ब्र.कु. राहुल, ब्र.कु. डॉ. राजेन्द्र, हेमराज सूर्यवंशी,एडवाइजर,खनिज विदेश इंडिया लिमिटेड, शांतनु कारकून,रिटायर्ड वाइस प्रेसिडेंट,रिलायंस पॉवर लिमिटेड, सुरेश राव,सेन्ट्रल बैंक ऑफ इंडिया रिटायर्ड जी.एम., ओम प्रकाश पांडे,रिटायर्ड आर्मी ऑफिसर, शशिकांत तिवारी,शीतल मेगा परिवार समिति,सचिव तथा अन्य।

इंदौर-न्यू पलासिया(म.प्र.)। नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो,इंदौर द्वारा नशा मुक्त भारत अभियान के अंतर्गत संचालित 'प्रोजेक्ट स्पंदन' के तहत आयोजित ध्यान एवं जागरूकता कार्यक्रम के अंत में शपथ लेते हुए सभी नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो के स्टाफ, धार्मिक प्रभाग के जोनल कोऑर्डिनेटर राजयोगी ब्र.कु. नारायण एवं ब्र.कु. संगीता।

दुर्ग-केलाबाड़ी(छ.ग.)। विश्व तम्बाकू निषेध दिवस के अवसर पर नशा मुक्त भारत अभियान के तहत दुर्ग रेलवे स्टेशन के परिसर में आयोजित व्यसन मुक्त चित्र प्रदर्शनी का दीप प्रज्वलित कर शुभारम्भ करते हुए ब्र.कु. पूर्णिमा, ब्र.कु. रेणु, स्टेशन अधीक्षक टी. जायसवाल, राजेन्द्र सिंह,जीआरपी चौकी एवं रागिनी सिदार,मिथुन मंडल आरपीएफ।

पचोर-म.प्र.। डॉ. धर्मेन्द्र सिंह भदौरिया,एमबीबीएस को लायंस क्लब अध्यक्ष बनने पर बधाई देने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. वैशाली। साथ हैं ब्र.कु. मोनिका तथा अन्य।